International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics

IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
July-September 2025 | Vol. 01 | Issue 2

Website: www.thearyapublication.com

आदिवासी विद्यालयों में विद्यार्थी संलग्नता: एक समीक्षात्मक अध्ययन

अभय कुमार[1] & प्रोफेसर गोपाल कृष्ण ठाकुर[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ई-मेल: mishraabhay612@gmail.com
[2]हेड & डीन, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ई-मेल: gopalthakur@hindivishwa.ac.in
DOI: **https://doi.org/10.5281/zenodo.17314158**

Accepted on: 29/09/2025 Published on: 10/10/2025

सारांश:

शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की संलग्नता (Student Engagement) आज वैश्विक पटल पर महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुकी है। इसका संबंध केवल विद्यार्थियों की उपस्थिति से नहीं, बल्कि उनकी बौद्धिक सक्रियता, भावनात्मक जुड़ाव और सामाजिक सहभागिता से है। विशेष रूप से आदिवासी विद्यालयों में यह विषय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि इन विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक कारक प्रभाव डालते हैं। प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन का उद्देश्य आदिवासी विद्यालयों में विद्यार्थियों की संलग्नता से संबंधित पूर्ववर्ती शोधों का गहन विश्लेषण करना है। इसमें प्रकाशित शोध आलेखों का भारतीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। चयनित शोधों में गुणात्मक, मात्रात्मक तथा मिश्रित पद्धतियों का उपयोग हुआ है तथा इन अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि आदिवासी विद्यार्थियों की संलग्नता मुख्य रूप से शिक्षक की भूमिका, पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता, विद्यालयीय वातावरण, पारिवारिक सहयोग तथा सांस्कृतिक संदर्भों पर निर्भर करती है। शोध-पत्र का निष्कर्ष यह है कि आदिवासी विद्यालयों में विद्यार्थियों की संलग्नता बढ़ाने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण में सांस्कृतिक उत्तरदायित्व, संवादात्मक कक्षा-प्रशासन तथा नवाचारी शिक्षण विधियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

मुख्य शब्द: *विद्यार्थी संलग्नता, आदिवासी विद्यालय, शिक्षक शैली, विद्यालय संस्कृति और नवाचारी शिक्षण।*

प्रस्तावना: शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया ही नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास तथा समाजीकरण की प्रक्रिया भी है। विद्यालय वह संस्थान है जहाँ विद्यार्थी न केवल औपचारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं,

बल्कि सहभागिता, सहयोग, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का भी विकास करते हैं। इस संदर्भ में विद्यार्थी संलग्नता (Student Engagement) एक केंद्रीय अवधारणा के रूप में उभरकर सामने आती है। विद्यार्थी संलग्नता से अभिप्राय विद्यार्थियों की कक्षा और विद्यालयीय गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी, सीखने की प्रेरणा, आत्म-विश्वास तथा संवादात्मकता से है। पिछले कुछ दशकों में शोधकर्ताओं ने यह पाया है कि विद्यार्थी संलग्नता सीधे-सीधे शैक्षिक उपलब्धि, विद्यालय छोड़ने की दर, तथा विद्यार्थियों के सामाजिक-भावनात्मक विकास से जुड़ी हुई है। विशेष रूप से आदिवासी विद्यालयों में, जहाँ विद्यार्थियों का सांस्कृतिक परिवेश मुख्यधारा से भिन्न होता है, वहाँ उनकी संलग्नता शिक्षा की सफलता का प्रमुख आधार बन जाती है। यदि शिक्षक और विद्यालय का वातावरण सहयोगात्मक, संवादात्मक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील है तो विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से सीखने की प्रक्रिया में जुड़ते हैं। इसके विपरीत, कठोर या एकतरफा शिक्षण शैली विद्यार्थियों को निष्क्रिय बना सकती है।

भारत में आदिवासी समुदायों की शिक्षा लंबे समय से उपेक्षित रही है। विद्यालय जाने वाले आदिवासी विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी है, किंतु उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई हैं। इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह माना जाता है कि विद्यालयों में उनकी संलग्नता का स्तर पर्याप्त नहीं है। यही कारण है कि वर्तमान अध्ययन में इस अवधारणा की समीक्षा करना अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। प्रस्तुत समीक्षा का प्रमुख उद्देश्य शोधकर्ता के मस्तिष्क पटल में यह है कि उपलब्ध शोध साहित्य के आधार पर यह समझा जाए कि विद्यार्थी संलग्नता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं, आदिवासी विद्यालयों में इसके क्या आयाम हैं, और भविष्य में इस दिशा में शोध एवं व्यवहारिक प्रयासों की क्या संभावनाएँ हो सकती हैं।

शोध पद्धति:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थी संलग्नता से जुड़े प्रकाशित शोध आलेखों का अध्ययन किया गया। इसमें भारतीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों प्रकार के अध्ययनों को शामिल किया गया है, ताकि विषय का संतुलित और व्यापक दृष्टिकोण सामने आ सके। शोध आलेख एकत्र करने के लिए गूगल स्कॉलर, रिसर्चगेट, जे-स्टोर, विभिन्न शैक्षणिक जर्नल और विश्वविद्यालय पुस्तकालयों का उपयोग किया गया। शोध आलेख का अध्ययन करते समय यह ध्यान रखा गया कि उनमें विद्यार्थी संलग्नता को मुख्य विषय बनाया गया हो, वे विद्यालयी शिक्षा विशेषकर आदिवासी या बहुसांस्कृतिक संदर्भ से जुड़े हों, और उनमें उद्देश्य, पद्धति तथा निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दिए गए हों। हिन्दी

और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में उपलब्ध शोध कार्यों को शामिल किया गया। वहीं, ऐसे अध्ययन जिनमें विद्यार्थी संलग्नता का उल्लेख नहीं था या जो केवल शैक्षिक उपलब्धि पर केंद्रित थे, उन्हें इस समीक्षा से बाहर रखा गया। विभिन्न शोध अध्ययन इस समीक्षा में सम्मिलित किए गए है तथा इनमें अधिकांश शोध अध्ययन भारतीय परिप्रेक्ष्य पर आधारित हैं, जबकि कुछ शोध अध्ययन अंतरराष्ट्रीय संदर्भों से लिए गये हैं। इन अध्ययनों में विभिन्न शोध विधियों का प्रयोग किया गया है। कुछ अध्ययन गुणात्मक पद्धति पर आधारित थे जिनमें साक्षात्कार और केस स्टडी का प्रयोग हुआ, कुछ मात्रात्मक पद्धति वाले थे जिनमें सर्वेक्षण और सांख्यिकीय विश्लेषण शामिल थे, और कुछ मिश्रित पद्धति वाले थे जिनमें दोनों प्रकार की तकनीकों का उपयोग हुआ। इस प्रकार चयनित अध्ययनों की विविधता इस समीक्षा को अधिक समग्र और विश्वसनीय बनाती है।

समीक्षित समीक्षा:

विद्यार्थी संलग्नता आज के शैक्षिक शोध का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। विशेषकर आदिवासी विद्यालयों के संदर्भ में यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि विद्यार्थी कक्षा और विद्यालय से किस हद तक जुड़ाव महसूस करते हैं, कितनी सक्रियता से भाग लेते हैं और उनका शैक्षिक आत्मविश्वास कैसा है। एक शोधकर्ता के रूप में मैंने इस विषय पर पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का अवलोकन किया, जिनसे यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थी संलग्नता केवल कक्षा की गतिविधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पारिवारिक परिवेश, शिक्षक की शैली, विद्यालयीय वातावरण और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जैसें अनेक आयामों से प्रभावित होती है। जो विभिन्न शोध आलेखों की समीक्षा प्रस्तुत है-

हैट (2012) ने अपने शोध पत्र "स्मार्टनेस एज ए कल्चरल प्रैक्टिस इन स्कूल्स" में यह समझने का प्रयास किया कि विद्यालयों में स्मार्टनेस को किस प्रकार एक सांस्कृतिक निर्माण के रूप में देखा और सिखाया जाता है। शोध का उद्देश्य यह था कि विद्यार्थियों की शैक्षिक पहचान और उपलब्धि में स्मार्टनेस की भूमिका को परखा जाए और यह भी जाना जाए कि इसका संबंध शिक्षकों की अपेक्षाओं तथा विद्यालयीय असमानताओं से किस प्रकार जुड़ता है। इस अध्ययन में किंडरगार्टन कक्षा के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया और नृजातीय शोध पद्धति अपनाते हुए एक वर्ष तक अवलोकन और सहभागिता की प्रक्रिया चलायी गयी। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि स्मार्टनेस को केवल जैविक क्षमताओं का परिणाम नहीं माना जा सकता, बल्कि यह शिक्षकों की कार्यप्रणालियों, अपेक्षाओं और

कक्षा में निर्मित सांस्कृतिक वातावरण से गहराई से जुड़ा होता है। पांडे (2017) ने अपने शोध "स्टूडेंट एंगेजमेंट एंड स्कूल कल्चर इन ओडिशा" में ओडिशा के आदिवासी विद्यालयों में विद्यालयी संस्कृति और विद्यार्थियों की सहभागिता के बीच संबंध को समझने का प्रयास किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह था कि विद्यालय के वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध और सहभागिता की संस्कृति विद्यार्थियों की सक्रियता और प्रेरणा को किस प्रकार प्रभावित करती है। शोध के अंतर्गत आदिवासी विद्यालयों के शिक्षक और विद्यार्थी प्रतिभागी रहे तथा अर्ध-संरचित साक्षात्कार और विद्यालय जीवन से संबंधित गतिविधियों का अवलोकन पद्धति के रूप में अपनाई गई। परिणामों से ज्ञात हुआ कि जहाँ विद्यालयों में शिक्षक-विद्यार्थी के बीच सहयोगी और सकारात्मक संवाद की संस्कृति विकसित थी, वहाँ विद्यार्थियों में कक्षा-संलग्नता, आत्मविश्वास और उत्साह का स्तर अत्यधिक ऊँचा था। कुमार (2020) ने अपने शोध पत्र "इनोवेटिव टीचिंग एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट इन रेसिडेंशियल ट्राइबल स्कूल्स इन झारखंड" में झारखंड के आदिवासी आवासीय विद्यालयों पर ध्यान केंद्रित किया। शोध का उद्देश्य यह जानना था कि नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों की संलग्नता और शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। इस अध्ययन में 10 विद्यालयों के लगभग 200 विद्यार्थियों को प्रतिभागी के रूप में लिया गया और मिश्रित पद्धति का उपयोग किया गया। इसमें सर्वेक्षण, कक्षा अवलोकन और फोकस ग्रुप डिस्कशन सम्मिलित थे। निष्कर्षों में यह पाया गया कि प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण, समूह कार्य, संवादात्मक गतिविधियाँ और खेल-आधारित शिक्षण जैसी नवाचारी विधियाँ विद्यार्थियों की सहभागिता को बढ़ाती हैं और उनके आत्मविश्वास तथा शैक्षिक उपलब्धियों में महत्वपूर्ण सुधार लाती हैं। राजपूत (2019) ने "स्टूडेंट एंगेजमेंट एंड टीचर स्टाइल: अ स्टडी इन मध्य प्रदेश" शीर्षक से शोध करते हुए यह समझने का प्रयास किया कि शिक्षक की शिक्षण शैली और व्यवहार विद्यार्थियों की संलग्नता पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत मध्य प्रदेश के 15 विद्यालयों को चुना गया और दीर्घकालिक केस स्टडी पद्धति के अंतर्गत कक्षा अवलोकन तथा अर्ध-संरचित साक्षात्कार का प्रयोग किया गया। निष्कर्षों में यह स्पष्ट हुआ कि जिन शिक्षकों का व्यवहार प्रेरक, संवादात्मक और विद्यार्थियों के अनुभवों को महत्व देने वाला था, वहाँ विद्यार्थियों की सक्रियता और सहभागिता का स्तर अत्यधिक ऊँचा पाया गया। इसके विपरीत, जिन शिक्षकों ने केवल पारंपरिक व्याख्यान शैली पर निर्भर रहकर शिक्षण किया, वहाँ विद्यार्थियों की संलग्नता और सक्रियता में कमी रही। अध्ययन इस बात पर बल देता है कि यदि शिक्षक अपनी शिक्षण शैली में लचीलापन, संवादात्मकता

और विद्यार्थियों के जीवनानुभवों को सम्मिलित करते हैं, तो विद्यार्थियों की सहभागिता अधिक प्रबल होती है। स्मिथ (2019) ने "स्टूडेंट एंगेजमेंट इन मल्टीकल्चरल क्लासरूम्स: अ केस स्टडी इन ऑस्ट्रेलिया" शीर्षक से शोध किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना था कि बहुसांस्कृतिक कक्षाओं में विद्यार्थियों की सहभागिता शिक्षकों की सांस्कृतिक बुद्धिमत्ता से किस प्रकार प्रभावित होती है। इस शोध में ऑस्ट्रेलिया के 8 विद्यालयों को चुना गया, जहाँ 250 विद्यार्थियों और उनके शिक्षकों को प्रतिभागी के रूप में शामिल किया गया। मिश्रित पद्धति के अंतर्गत सर्वेक्षण, कक्षा-अवलोकन और शिक्षकों के साक्षात्कार लिए गए। निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि जब शिक्षक सांस्कृतिक दृष्टि से संवेदनशील और समावेशी गतिविधियों का उपयोग करते हैं, तो विद्यार्थियों की आत्म-विश्वास, सहभागिता और शैक्षिक उपलब्धियों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इसके विपरीत, जब शिक्षण में विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की उपेक्षा की जाती है, तो विद्यार्थियों की रुचि और प्रेरणा में कमी देखी जाती है। यह अध्ययन इस तथ्य को पुष्ट करता है कि बहुसांस्कृतिक संदर्भों में विद्यार्थियों की संलग्नता बढ़ाने के लिए शिक्षक की सांस्कृतिक इंटेलिजेंस एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जोन्स (2018) ने अपने शोध "स्टूडेंट एंगेजमेंट एंड टीचर इंटरैक्शन्स इन रूरल स्कूल्स: अ स्टडी इन कनाडा" में ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षक-विद्यार्थी संवाद की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच संवाद, व्यक्तिगत देखभाल और सहभागिता विद्यार्थियों की संलग्नता को कैसे प्रभावित करते हैं। शोध में ग्रामीण कनाडा के विद्यालयों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया और केस स्टडी पद्धति अपनाई गई, जिसमें कक्षा-अवलोकन और गहन साक्षात्कार का उपयोग हुआ। निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि जिन कक्षाओं में शिक्षक विद्यार्थियों से व्यक्तिगत स्तर पर संवाद करते थे और उन्हें प्रोजेक्ट-आधारित गतिविधियों में सम्मिलित करते थे, वहाँ विद्यार्थियों की सहभागिता और सक्रियता उच्च स्तर पर रही। इसके विपरीत, जहाँ शिक्षक केवल औपचारिक शिक्षण पद्धतियों तक सीमित रहे, वहाँ विद्यार्थी निष्क्रिय दिखाई दिए। लोपेज़ (2017) ने "कल्चरल इंटेलिजेंस एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट इन लैटिन अमेरिकन स्कूल्स" शीर्षक से अध्ययन किया। इस शोध का उद्देश्य यह जानना था कि लैटिन अमेरिकी विद्यालयों में शिक्षकों की सांस्कृतिक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों की सहभागिता पर किस प्रकार प्रभाव डालती है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण और फोकस ग्रुप डिस्कशन के माध्यम से डाटा संकलित किया गया और विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक तथा विद्यार्थी प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित हुए। निष्कर्षों से यह सामने आया कि जिन शिक्षकों ने सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील

शिक्षण विधियों का प्रयोग किया, वहाँ विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ा और उनकी कक्षा-संलग्नता का स्तर विशेष रूप से ऊँचा रहा। इसके विपरीत, जहाँ शिक्षक स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों को शिक्षण में शामिल नहीं करते थे, वहाँ विद्यार्थियों में निष्क्रियता अधिक देखी गई। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों की संलग्नता को बढ़ाने के लिए स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करना आवश्यक है। मिलर (2016) ने अपने शोध "टीचर स्ट्रैटेजीज़ एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट इन अर्बन स्कूल्स: अ यूएस केस स्टडी" में अमेरिकी शहरी विद्यालयों पर ध्यान केंद्रित किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह था कि शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण रणनीतियाँ विद्यार्थियों की सहभागिता और शैक्षिक उपलब्धियों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। अध्ययन में शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित किया गया तथा दीर्घकालिक कक्षा-अवलोकन और अर्ध-संरचित साक्षात्कार की पद्धति अपनाई गई। निष्कर्षों में यह पाया गया कि संवादात्मक शिक्षण पद्धतियाँ, समूह-आधारित गतिविधियाँ और विद्यार्थियों को निर्णय प्रक्रिया में सम्मिलित करना उनकी संलग्नता बढ़ाने में सबसे अधिक सहायक रहीं। शर्मा (2016) ने अपने अध्ययन "आदिवासी विद्यार्थियों में अभिभावकीय सहभागिता का अध्ययन" में यह समझने का प्रयास किया कि आदिवासी परिवारों में माता-पिता की सहभागिता विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति और कक्षा-संलग्नता को कैसे प्रभावित करती है। अध्ययन में झारखंड और छत्तीसगढ़ के आदिवासी विद्यालयों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया और विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा शिक्षकों से साक्षात्कार के माध्यम से आँकडों को संकलित किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि जिन परिवारों में अभिभावक विद्यालयी गतिविधियों में रुचि लेते थे और बच्चों को पढ़ाई के लिए प्रेरित करते थे, वहाँ विद्यार्थियों की सहभागिता अधिक थी। इसके विपरीत, जिन परिवारों का विद्यालय से जुड़ाव कम था, वहाँ विद्यार्थी निष्क्रिय और कम प्रेरित दिखाई दिए। कुमारी(2018) ने अपने शोध"आदिवासी बालिकाओं में अधिगम संकट: कन्या छात्रावास विद्यालयों का अध्ययन" में आदिवासी बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं और उनकी सहभागिता की स्थिति का मूल्यांकन किया। अध्ययन का उद्देश्य यह था कि छात्रावासीय व्यवस्था बालिकाओं की शैक्षिक सक्रियता और कक्षा-संलग्नता को किस प्रकार प्रभावित करती है। इस शोध में ओडिशा और मध्य प्रदेश के कन्या छात्रावास विद्यालयों की बालिकाएँ प्रतिभागी रहीं। सर्वेक्षण और गहन साक्षात्कार की पद्धति से डेटा संकलित किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि छात्रावासीय जीवन में सामूहिक गतिविधियों और सहपाठियों का सहयोग बालिकाओं की संलग्नता को बढ़ाता है, किन्तु संसाधनों

की कमी और भाषा संबंधी अवरोध उनकी सक्रियता में बाधक सिद्ध होते हैं। उरांव (2019)ने "झारखंड में आदिवासी बच्चों की शिक्षा: एक स्थितिगत विश्लेषण" शीर्षक से शोध किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि झारखंड के आदिवासी विद्यालयों में शिक्षा की स्थिति और विद्यार्थियों की संलग्नता कैसी है। अध्ययन में झारखंड के कई प्रखंडों के विद्यालयों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया और मात्रात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि जहाँ विद्यालयों में शिक्षक नियमित, प्रशिक्षित और संवादात्मक थे, वहाँ विद्यार्थियों की सहभागिता का स्तर ऊँचा था। वहीं, जिन विद्यालयों में संसाधनों और शिक्षकों की कमी थी, वहाँ विद्यार्थियों की कक्षा-संलग्नता न्यूनतम पाई गई। नायर (2020) ने अपने अध्ययन "भारत के माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थी संलग्नता का अध्ययन" में यह समझने का प्रयास किया कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सहभागिता किन आयामों से निर्मित होती है। अध्ययन में विभिन्न राज्यों के 500 विद्यार्थियों को प्रतिभागी बनाया गया और प्रश्नावली के माध्यम से डेटा संकलित किया गया। निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता, शिक्षक की संवादात्मकता और सहपाठियों के साथ सहयोग की भावना, ये तीनों मिलकर विद्यार्थियों की संलग्नता को निर्धारित करते हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि यदि कक्षा का वातावरण अधिक संवादात्मक और प्रोत्साहनपूर्ण हो तो विद्यार्थियों की सक्रियता और शैक्षिक प्रदर्शन दोनों में सुधार होता है। एंडरसन (2018) ने अपने अध्ययन "आदिवासी विद्यार्थियों की संलग्नता और स्थायित्व का पुनर्परीक्षण: ऑस्ट्रेलियाई परिप्रेक्ष्य" में यह देखा कि आदिवासी विद्यार्थियों की कक्षा-संलग्नता को बढ़ाने में कौन-से कारक सबसे अधिक सहायक सिद्ध होते हैं। अध्ययन में ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न विद्यालयों को शामिल किया गया और सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई। निष्कर्षों से यह सामने आया कि जब शिक्षण में स्थानीय संस्कृति और आदिवासी परंपराओं को सम्मिलित किया गया, तो विद्यार्थियों की संलग्नता और विद्यालय में स्थायित्व दोनों में वृद्धि हुई। इसके विपरीत, पश्चिमी दृष्टिकोण आधारित एकतरफा शिक्षण में उनकी सहभागिता कम रही। घोष (2019) ने "विज्ञान शिक्षा में आदिवासी विद्यार्थियों की संलग्नता: एक केस स्टडी" शीर्षक से शोध किया। अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि विज्ञान विषय में आदिवासी विद्यार्थियों की सहभागिता किस प्रकार निर्मित होती है। इसके लिए एक विद्यालय को केस स्टडी के रूप में चुना गया और विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों को भी प्रतिभागी बनाया गया। कक्षा-अवलोकन और समूह चर्चा के माध्यम से डेटा संकलित किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि यदि विज्ञान शिक्षण को स्थानीय उदाहरणों और व्यावहारिक गतिविधियों के

साथ जोड़ा जाए तो विद्यार्थियों की रुचि और सहभागिता बढ़ती है। इसके विपरीत, केवल पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण से उनकी सक्रियता सीमित रहती है।

उपरोक्त समीक्षा से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी संलग्नता केवल विद्यालय में उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें बच्चे की बौद्धिक सक्रियता, भावनात्मक जुड़ाव और सामाजिक सहभागिता सम्मिलित होती है। आदिवासी विद्यालयों में संलग्नता का स्वरूप और भी जटिल हो जाता है क्योंकि यहाँ सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संदर्भ और भाषायी विविधता प्रमुख भूमिका निभाते हैं। विभिन्न अध्ययनों के विश्लेषण से यह समझ में आता है कि शिक्षक की शिक्षण शैली और विद्यार्थियों के प्रति उसका दृष्टिकोण विद्यार्थियों की संलग्नता पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है। जब शिक्षक संवादात्मक, प्रेरणादायी और संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाते हैं, तब विद्यार्थी न केवल कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रहते हैं बल्कि उनमें सीखने के प्रति उत्साह और आत्मविश्वास भी विकसित होता है। इसके विपरीत, जहाँ शिक्षण परंपरागत, एकतरफा और व्याख्यान आधारित होता है, वहाँ विद्यार्थियों की सक्रियता और भागीदारी घट जाती है।

विद्यार्थी संलग्नता का संकल्पनात्मक मॉडल:

विद्यालय का वातावरण भी विद्यार्थी संलग्नता का एक महत्वपूर्ण कारक है। यदि विद्यालय में सहयोगी, समावेशी और प्रेरक वातावरण हो, जहाँ शिक्षक-विद्यार्थी संबंध मधुर और सहयोगात्मक हों, तो विद्यार्थियों में आत्मीयता और जुड़ाव की भावना विकसित होती है। पांडे (2017) और राजपूत (2019)। पारिवारिक सहभागिता और समुदाय का सहयोग भी संलग्नता को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख आयाम है। शर्मा (2016) और उरांव (2019) के अध्ययनों से स्पष्ट हुआ कि जब अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और विद्यालय से जुड़े रहते हैं, तो बच्चों में पढ़ाई के प्रति अधिक उत्साह और सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। परंतु आदिवासी क्षेत्रों में यह सहयोग अक्सर आर्थिक कठिनाइयों, निरक्षरता और सामाजिक समस्याओं के कारण सीमित रह जाता है। भाषायी और सांस्कृतिक संदर्भ भी संलग्नता के निर्धारक हैं। कई अध्ययनों से यह तथ्य सामने आया कि जब शिक्षण स्थानीय भाषा और संस्कृति से जुड़ा होता है, तब विद्यार्थी अधिक सहज और सक्रिय रहते हैं। लोपेज (2017), स्मिथ (2019) और घोष (2019) ने यह दर्शाया कि सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षण गतिविधियाँ विद्यार्थियों की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं और उनके आत्मविश्वास को मजबूत करती हैं। यदि शिक्षा पूरी तरह

बाहरी या अजनबी संस्कृति पर आधारित हो, तो विद्यार्थी उसमें रुचि खो देते हैं और धीरे-धीरे निष्क्रियता की ओर बढ़ जाते हैं। नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ जैसें- प्रोजेक्ट आधारित अधिगम, समूह कार्य, खेल-आधारित गतिविधियाँ और सहभागी शिक्षण आदिवासी विद्यार्थियों की संलग्नता को बढ़ाने में विशेष रूप से प्रभावी पायी गयी हैं। कुमार (2020), मिलर (2016) और जोन्स (2018) के अध्ययनों से यह प्रमाणित होता है कि जब विद्यार्थियों को केवल श्रोता नहीं बल्कि सक्रिय प्रतिभागी बनाया जाता है, तो वे कक्षा में अधिक उत्साह और ऊर्जा के साथ भाग लेते हैं। इससे न केवल उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है बल्कि सामाजिक सहयोग और नेतृत्व क्षमता भी विकसित होती है। अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों, जैसें- एंडरसन (2018) और स्मिथ (2019), ने यह भी स्पष्ट किया कि बहुसांस्कृतिक और ग्रामीण संदर्भों में विद्यार्थियों की संलग्नता बनाए रखने के लिए शिक्षक का सांस्कृतिक बुद्धिमता और व्यक्तिगत संवाद अत्यंत आवश्यक है। शिक्षक यदि विद्यार्थियों के जीवन अनुभव, सामाजिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक पहचान को सम्मान देते हैं, तो बच्चे विद्यालय को अपने जीवन का हिस्सा मानते हैं और शिक्षा में स्थायित्व बनाए रखते हैं।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध समीक्षा से यह संज्ञान मिलता है कि आदिवासी विद्यालयों में विद्यार्थियों की संलग्नता केवल कक्षा में उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सक्रिय भागीदारी, संवाद और प्रेरणा से जुड़ी एक गहन प्रक्रिया है। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक की संवेदनशीलता और उनकी शिक्षण शैली सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। जब शिक्षक संवादात्मक और सहयोगी दृष्टिकोण अपनाते हैं तथा विद्यार्थियों की भाषा और संस्कृति को मान्यता देते हैं, तब उनकी रुचि और आत्मविश्वास बढ़ता है। विद्यालय का सहयोगी वातावरण और पारिवारिक-सामुदायिक भागीदारी भी संलग्नता को मजबूत करती है। साथ ही, प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम, समूह गतिविधियाँ और खेल जैसी नवाचारी पद्धतियाँ विद्यार्थियों की सहभागिता और शैक्षिक उपलब्धि को बेहतर बनाती हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि आदिवासी विद्यालयों में विद्यार्थी संलग्नता शिक्षक, विद्यालय, परिवार और समुदाय के संयुक्त प्रयास पर निर्भर करती है और इन प्रयासों से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संभव हो पाती है।

सन्दर्भ:

- उरांव, बी. (2019). झारखंड में आदिवासी बच्चों की शिक्षा: एक स्थितिगत विश्लेषण. *भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका, 44*(1), 120-134.

- एंडरसन, पी. (2018). आदिवासी विद्यार्थियों की संलग्नता और स्थायित्व का पुनर्परीक्षण: ऑस्ट्रेलियाई परिप्रेक्ष्य. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडिजिनस एजुकेशन, 32*(2), 210-225.
- कुमार, पी. (2020). रेसिडेंशियल स्कूल्स में स्टूडेंट एंगेजमेंट: अ स्टडी ऑफ झारखंड. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 16*(2), 115-134.
- कुमारी, एम. (2018). आदिवासी बालिकाओं में अधिगम संकट: कन्या छात्रावास विद्यालयों का अध्ययन. *महिला शिक्षा पत्रिका, 5*(2), 88-102.
- घोष, एस. (2019). विज्ञान शिक्षा में आदिवासी विद्यार्थियों की संलग्नता: एक केस स्टडी. *विज्ञान शिक्षा समीक्षा, 11*(1), 42-58.
- घोष, बी. (2012). स्टूडेंट एंगेजमेंट एंड एजुकेशनल रिसोर्सेज इन वेस्ट बंगाल. *बंगाल एजुकेशन रिव्यू, 7*(2), 44-62.
- चौहान, एन. (2010). सोशियो इकोनॉमिक फैक्टर्स एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट: अ स्टडी इन राजस्थान. *जर्नल ऑफ डेवलपमेंट एंड एजुकेशन स्टडीज, 4*(1), 29-46.
- जोन्स, ए. (2018). स्टूडेंट एंगेजमेंट एंड टीचर इंटरैक्शन्स इन रूरल स्कूल्स: अ स्टडी इन कनाडा. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड प्रैक्टिस, 13*(3), 101-120.
- जोशी, ए. (2015). बालिकाओं की एजुकेशन एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट इन महाराष्ट्र. *जर्नल ऑफ जेंडर एंड एजुकेशन स्टडीज, 11*(2), 65-82.
- नायर, एस. (2013). क्लासरूम एंगेजमेंट इन ट्राइबल कम्युनिटीज: अ स्टडी इन केरल. *जर्नल ऑफ साउथ इंडियन एजुकेशन स्टडीज, 6*(3), 101-120.
- नायर, के. (2020). भारत के माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थी संलग्नता का अध्ययन. *भारतीय मनोविज्ञान जर्नल, 26*(4), 59-75.
- पांडेय, एल. (2016). टीचर स्टूडेंट इंटरैक्शन एंड क्लासरूम एंगेजमेंट इन ओडिशा. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल पॉलिसी एंड प्रैक्टिस, 14*(4), 88-104.
- मिलर, आर. (2016). टीचर स्ट्रैटेजीज एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट इन अर्बन स्कूल्स: अ यूएस केस स्टडी. *जर्नल ऑफ यूएस एजुकेशन स्टडीज, 8*(2), 110-128.
- मिश्रा, डी. (2014). स्टूडेंट एंगेजमेंट एंड टीचर कल्चरल इंटेलिजेंस: अ कंपरेटिव स्टडी ऑफ मध्य प्रदेश एंड गुजरात. *इंडियन जर्नल ऑफ कंपरेटिव एजुकेशन, 8*(1), 55-72.

- मेहता, वी. (2020). विद्यार्थी संलग्नता के माध्यम से भारतीय विद्यालयों का रूपांतरण. *शिक्षा और विकास, 18*(3), 101-118.
- राजपूत, ए. (2019). इनोवेटिव टीचिंग प्रैक्टिसेज एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट इन मध्य प्रदेश. *इंडियन जर्नल ऑफ इनोवेटिव एजुकेशन, 13*(1), 55-73.
- राठौर, एम. (2011). स्टूडेंट एंगेजमेंट एंड राइट टू एजुकेशन एक्ट इन ट्राइबल एरियाज़. *जर्नल ऑफ लीगल स्टडीज इन एजुकेशन, 5*(4), 77-94.
- लोपेज, सी. (2017). कल्चरल इंटेलिजेंस एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट इन लैटिन अमेरिकन स्कूल्स. *जर्नल ऑफ इंटरनेशनल एजुकेशन स्टडीज, 10*(1), 75- 93.
- वर्मा, पी. (2019). कल्चरल इंटेलिजेंस एंड क्लासरूम एंगेजमेंट: इनसाइट्स फ्रॉम ट्राइबल स्कूल्स इन झारखंड. *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल रिसर्च, 14*(2), 45-63.
- शर्मा, आर. (2018). स्टूडेंट एंगेजमेंट एंड टीचर प्रैक्टिसेज इन रूरल ट्राइबल स्कूल्स. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन स्टडीज, 12*(3), 77-92.
- सिंह, के. (2017). इनक्लूसिव टीचिंग एंड स्टूडेंट एंगेजमेंट: अ केस स्टडी इन मध्य प्रदेश. *जर्नल ऑफ ट्राइबल एजुकेशन, 9*(1), 34-50.
- स्मिथ, जे. (2019). स्टूडेंट एंगेजमेंट इन मल्टीकल्चरल क्लासरूम्स: अ केस स्टडी इन ऑस्ट्रेलिया. *जर्नल ऑफ इंटरनेशनल एजुकेशन, 15*(2), 88-105.
- हैट बी. (2012). स्मार्टनेस ऐज़ ए कल्चरल प्रैक्टिस इन स्कूल. *अमेरिकेन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल ,49*(3), 438-460.